

मल चिकित्सा का नया अध्याय

एक बैक्टीरिया के ज़िद्दी और कठिन संक्रमण के इलाज के लिए शायद मानव मल से प्राप्त सूक्ष्मजीवों का उपयोग किया जाएगा। *क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल* एक बैक्टीरिया है जिसका संक्रमण दस्त और बुखार पैदा कर सकता है। अभी यह स्पष्ट नहीं है कि भारत जैसे देशों में इस संक्रमण की स्थिति क्या है मगर संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रति वर्ष 5 लाख से ज़्यादा लोग इससे प्रभावित होते हैं और 14,000 लोग जान से हाथ धो बैठते हैं।

आजकल कुछ चिकित्सक *क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल* संक्रमण का इलाज एक अनोखी व गैर-पारंपरिक विधि से कर रहे हैं। इस इलाज के अंतर्गत किसी अन्य व्यक्ति के मल से प्राप्त तंदुरुस्त सूक्ष्मजीव मरीज़ के शरीर में प्रत्यारोपित किए जाते हैं। प्रत्यारोपण का यह काम एनीमा, कोलोनोस्कोप या नाक में नली लगाकर किया जाता है।

और अब सैन फ्रांसिस्को में आयोजित एक बैठक में बताया गया कि वही तंदुरुस्त सूक्ष्मजीव किसी दानदाता से प्राप्त करके एक कैप्सूल में पैक करके दिए जा सकते हैं और कारगर रहते हैं। कनाडा के केलगेरी विश्वविद्यालय के संक्रामक रोग विशेषज्ञ थॉमस लुइस ने 31 मरीज़ों का इलाज बैक्टीरियायुक्त गोलियों से किया। एक को छोड़कर बाकी सारे स्वस्थ हो गए। यह तो जानी-मानी बात है कि ऊपर बताई गई विधियों की अपेक्षा गोली खाना कहीं ज़्यादा आसान है। इस वजह से शायद गोली वाला तरीका ज़्यादा मरीज़ों के लिए लाभकारी होगा।

आम तौर पर देखा गया है कि *क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल*

व्यक्ति पर तब हमला करता है जब एंटीबायोटिक दवाइयों के उपयोग की वजह से व्यक्ति की आंतों में सामान्य सूक्ष्मजीव संतुलन गड़बड़ा जाता है। किसी स्वस्थ व्यक्ति के मल से प्राप्त सूक्ष्मजीव इस संतुलन को दुरुस्त कर सकते हैं। वैसे तो *क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल* काफी ज़िद्दी होता है और एंटीबायोटिक्स के हत्थे नहीं चढ़ता मगर मल प्रत्यारोपण इसे संभाल सकता है।

लुइस के अध्ययन में प्रत्येक मरीज़ को बैक्टीरिया को जिलेटिन के कैप्सूल में बंद करके दिया गया था। शोधकर्ताओं ने इन मरीज़ों का फालो-अप पूरे एक वर्ष तक किया और पाया कि *क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल* तो एकदम गायब हो चुके हैं और उनका स्थान कई सारे लाभकारी बैक्टीरिया ले चुके हैं।

वैसे शोधकर्ताओं का मानना है कि दानदाता के मल से प्राप्त बैक्टीरिया की जगह प्रयोगशाला में संवर्धित बैक्टीरिया का भी उपयोग किया जा सकेगा। सबसे बड़ी बात है कि कई कंपनियों ने लुइस से संपर्क करके ऐसी गोली के व्यापारिक उपयोग पर बातचीत शुरू कर दी है। दिक्कत यह है कि मल से प्राप्त बैक्टीरिया का मिश्रण प्रयोगशाला में निर्मित करना आसान नहीं होगा। मसलन, ऑटोरियो के किंगस्टन विश्वविद्यालय के इलैन पेट्रॉफ ने 33 बैक्टीरिया को मिलाकर एक नुस्खा तैयार किया है जो एक व्यक्ति के मल की अनुकृति है। उनके दल ने पूरे दो साल तक कोशिश करके यह सम्मिश्रण तैयार किया है और यह काफी महंगा साबित हुआ है। (*स्रोत फीचर्स*)